नित्यानन्द मिश्र

ॐमाला

ओंकार के अर्थ

BLOOMSBURY

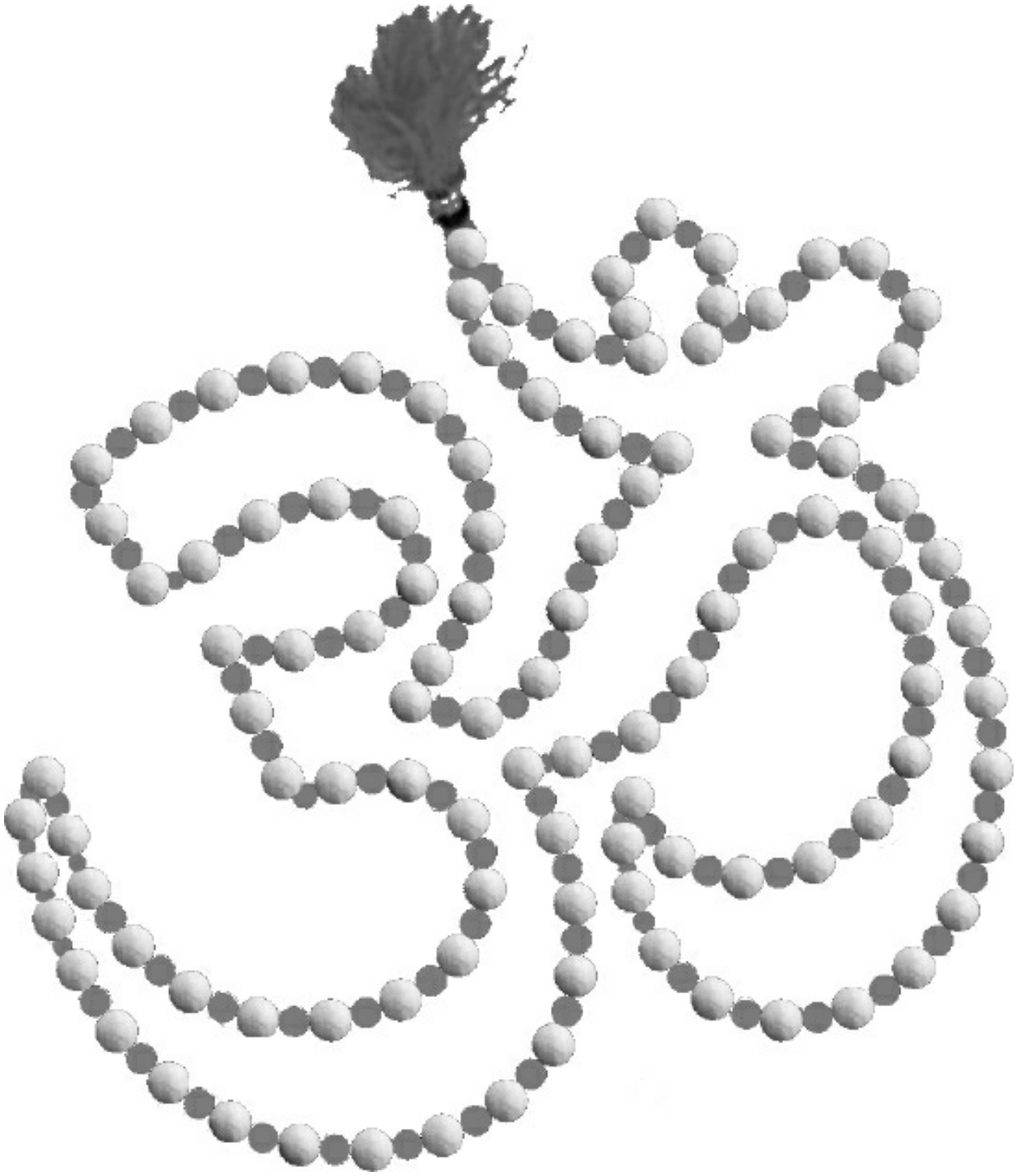

समर्पण

पूज्य पिताजी को समर्पित

जनिता भी उपनेता भी, विद्यादाता तदनन्तर,
अन्नदाता भयत्राता, आप हो मेरे पञ्च पितर।”

जनिता चोपनेता च यश्च विद्यां प्रयच्छति।
अन्नदाता भयत्राता पञ्चैते पितरः स्मृताः॥

—चाणक्यनीति

अनुक्रमणिका

1. समर्पण
2. पाठकों के लिए निर्देश
3. पुरोवाक्
4. ॐ माला
    1. ओम्, त्रिदैवत, त्रिदैवत्य (१)
    2. ओम्, उद्गीथ, त्र्यवस्थान (२)
    3. ओम्, त्रिधाम, त्रिमुख (३)
    4. ओम्, उद्गीथ, त्रिब्रह्म (४)
    5. ओम् (५)
    6. ओम् (६)
    7. ओम् (७)
    8. ओम् (८)
    9. ओम् (९)
    10. ओम् (१०)
    11. ओम्, त्रिगुण (११)
    12. ओम् (१२)
    13. ओम् (१३)
    14. ओम्, त्रिमात्र (१४)
    15. ओम् (१५)
    16. ओम् (१६)
    17. ओम् (१७)
    18. ओम्, ओंकार (१८)
    19. ओम्, प्रणव (१९)
    20. ओम्, ओंकार (२०)
    21. ओम् (२१)
    22. ओम् (२२)
    23. ओम्, प्रणव (२३)
    24. ओम् (२४)
    25. ओम् (२५)
    26. ओम्, पञ्चाक्षर (२६)
    27. ओम् (२७)
    28. ओम् (२८)
    29. ओंकार/ओङ्कार (२९)

30. प्रणव (३०)
31. प्रणव (३१)
32. प्रणव (३२)
33. प्रणव (३३)
34. प्रणव (३४)
35. प्रणव (३७)
36. प्रणव (३६)
37. प्रणव (३७)
38. प्रणव (३८)
39. प्रणव, ओंकार (३९)
40. उद्गीथ, त्रिमात्र (४०)
41. उद्गीथ (४१)
42. उद्गीथ (४२)
43. उद्गीथ (४३)
44. उद्गीथ, सूर्यान्तर्गत (४४)
45. अक्षर (४५)
46. अक्षर (४६)
47. स्वर (४७)
48. स्वर (४८)
49. आदिबीज (४९)
50. आदित्य (५०)
51. अद्वैत (५१)
52. अनादि (५२)
53. अनन्त (५३)
54. अव्यय (५४)
55. भवनाशन (५५)
56. बिन्दुशक्ति (५६)
57. ब्रह्म, परब्रह्म (५७)
58. ब्रह्मबीज, वेदबीज (५८)
59. ब्रह्माक्षर (५९)
60. ध्रुव, ध्रुवाक्षर (६०)
61. दिव्य (६१)
62. दिव्यमन्त्र (६२)
63. एक (६३)
64. एकाक्षर (६४)
65. गुणबीज, गुणजीवक (६५)
66. हंस (६६)

67. ईशान (६७)
68. लोकसार (६८)
69. मन्त्रादि, मन्त्राद्य (६९)
70. नारायण (७०)
71. निरञ्जन (७१)
72. पञ्चरश्मि (७२)
73. परम (७३)
74. परमाक्षर (७४)
75. प्रभु (७५)
76. प्रलय (७६)
77. प्रस्वार (७७)
78. रस (७८)
79. रुद्र (७९)
80. सर्वपावन (८०)
81. सर्वविद् (८१)
82. सर्वव्यापी (८२)
83. सत्य (८३)
84. सेतु (८४)
85. शब्द (८५)
86. श्रुतिपद (८६)
87. शुक्ल (८७)
88. सूक्ष्म (८८)
89. तार (८९)
90. त्रैकाल्य (९०)
91. त्रिधातु (९१)
92. त्रिक (९२)
93. त्रिलिङ्ग (९३)
94. त्रिप्रज्ञ (९४)
95. त्रिप्रतिष्ठित (९५)
96. त्रिप्रयोजन (९६)
97. त्रिरवस्थ (९७)
98. त्रिस्थान, त्र्यवस्थान (९८)
99. त्रिवृत् (९९)
100. त्र्यक्षर (१००)
101. वैद्युत (१०१)
102. वर्तुल (१०२)
103. वेदादि (१०३)

104. वेदारम्भ (१०४)
105. वेदात्मा (१०५)
106. विभु (१०६)
107. विष्णु (१०७)
108. विश्व (१०८)
109. ओम् (१०९)
5. नामसूची

पाठकों के लिए निर्देश

यह पुस्तक सामान्य पाठकों और विद्वानों दोनों के लिये है, अतः पढ़ने की सुविधा की दृष्टि से कुछ विशिष्ट नियम अपनाए गए हैं—

१) इस पुस्तक में कोई भी पादटिप्पणी (footnote) या अन्तटिप्पणी (endnote) नहीं है। अंग्रेज़ी में टिप्पणियाँ परिशिष्ट के रूप में http://independent.academia.edu/MisraNityanand पर प्रकाशित हैं।

२) पुस्तक का प्रत्येक भाग (माला का प्रत्येक मनका) परस्परोन्मुख बाएँ और दाएँ पृष्ठों पर या पूर्ण रूप से एक पृष्ठ पर ही संयोजित है।

३) *महाभारत* के *भीष्म पर्व* में स्थित *श्रीमद्भगवद्गीता* को सुविधा के लिये केवल *गीता* कहकर संदर्भित किया गया है।

४) *श्रीमद्भागवत पुराण* को *भागवत पुराण* कहकर और *देवी भागवत पुराण* को *देवी भागवत* कहकर संदर्भित किया गया है।

५) *बृहद् योगी याज्ञवल्क्य स्मृति* को केवल *योगी याज्ञवल्क्य स्मृति* कहकर संदर्भित किया गया है।

६) 'वेदों' और 'वैदिक ग्रन्थों' से अर्थ है वैदिक संहिताएँ, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, और उपनिषद्।

७) मनकों का क्रम वही है जो अंग्रेज़ी संस्करण में है, ताकि दोनों भाषाओं के संस्करणों का एक-साथ अध्ययन करने वाले पाठकों को सुविधा हो। किसी नाम को खोजने के लिये हिन्दी के पाठकों के लिये अकारादि क्रम से नामसूची परिशिष्ट में दी गयी है।

पुरोवाक्

प्रस्तुत पुस्तक इसलिये विशेष है क्योंकि इसका विषय केवल एक शब्द है—ॐ। तथापि यह पुस्तक ॐ रूपी सागर की कुछ बूँदों का संग्रह मात्र है। पुस्तक कुछ महीनों में लिखी गयी है जबकि ॐ को समझने के लिए एक जीवनकाल भी अपर्याप्त है। शुक्ल यजुर्वेद की *वाजसनेयी माध्यन्दिन संहिता* कहती है कि ॐ आकाशरूप ब्रह्म है। यह रूपक उचित ही है, जिस प्रकार अनन्त आकाश की सीमा नहीं उसी प्रकार ॐ के अर्थों का अन्त नहीं। उपनिषद् भारतीय दर्शन के शिरोमणि ग्रन्थ हैं, और अनेक उपनिषदों में ॐ पर गहन चर्चा है। कालिदास के अनुसार श्रुति के अर्थ का स्मृति अनुसरण करती है, और स्मृतियों में ॐ का अत्यन्त रुचिकर वर्णन है। भारत के दो अप्रतिम इतिहास ग्रन्थों—*रामायण* और *महाभारत*—में ॐ की प्रशंसा है। आधुनिक हिन्दू धर्म और भारतीय संस्कृति के स्तम्भ-भूत पुराणों में ॐ का अनेक प्रकार से वर्णन है। योग दर्शन संपूर्ण मानवता को भारत की देन है, और इस दर्शन में ॐ का बहुत मान है। तन्त्र के गुह्य एवं रहस्यमय मार्ग में ॐ आहत है। भक्ति से अनुप्राणित वैष्णव मत, शैव मत, और शाक्त मत में ॐ श्रद्धा का आस्पद है। ॐ अनेक जैन और बौद्ध मन्त्रों का भाग है और सिक्ख धर्म के एक शब्द (*इक्क ओअंकार*) के रूप में भी प्रशस्त है। ॐ का हिन्दू धर्म के सभी प्रमुख संप्रदायों और भारत के सभी प्रमुख धर्मों में आदर है। इस कारण से कोई भी पुस्तक योगियों द्वारा नित्य ध्यान किये जाने वाले इस अतिसूक्ष्म और महार्थ शब्द का पूर्ण चित्रण तो क्या, आंशिक चित्रण भी नहीं कर सकती।

फिर इस पुस्तक का उद्देश्य क्या है? ॐ को संस्कृत ग्रन्थों में अनगिनत नामों से जाना जाता है, और इनमें से अधिकांश नामों को अनेक प्रकार से समझा जा सकता है। इस पुस्तक में संस्कृत के अनेक ग्रन्थों—हिन्दू शास्त्रों के साथ-साथ कोशों, काव्यों, नाटकों, और संगीत-व्याकरण-आयुर्वेद के ग्रन्थों—में प्राप्त ॐ के चौरासी (८४) नामों और उनके विविध अर्थों की प्रस्तुति है। इस पुस्तक में प्रस्तुत सभी नाम संस्कृत ग्रन्थों से लिये गये हैं और उनके अर्थ भी संस्कृत व्याकरण के अनुसार हैं, तथापि अन्य भाषाओं के ग्रन्थों से यथोचित उदाहरण दिये गये हैं। उपनिषदों और पुराणों में प्राप्त ॐ की चर्चा बहुत पुस्तकों का विषय है। इस पुस्तक में उपनिषदों और पुराणों के साथ-साथ ॐ के नामों की अनेक विरल व्याख्याएँ योग दर्शन, तन्त्र शास्त्र, और संस्कृत भाष्यों से संगृहीत हैं।

इस पुस्तक में १०९ भाग हैं, और प्रत्येक भाग में ॐ के एक नाम या एक से अधिक परन्तु सदृश नामों के अर्थ प्रस्तुत किये गये हैं। अर्थ के साथ-साथ प्रत्येक भाग में नामों की व्याख्या, संबन्धित परम्पराओं की सूची, और शास्त्रीय उद्धरणों के अनुवाद भी दिये गये हैं। अधिकांश भागों में नामों की व्युत्पत्ति भी दी गयी है। जपने वाली माला में १०९ मनके होते हैं, जिनमें १०८ मनके मन्त्र जपने के लिये प्रयुक्त होते हैं और गुरु मनका (सुमेरु मनका) जाप की आवृत्तियाँ गिनने के लिए प्रयुक्त होता है। माला की प्रत्येक आवृत्ति पूर्ण होने पर माला फेरने की दिशा उलट दी जाती है।